जगदंबा प्रसाद दीक्षित के मुरदाःघर उपन्यास का भाषा शैलीगत अध्ययन

प्रा. लक्ष्मण के. पेटकुले
(हिंदी विभागाध्यक्ष)
एस. एन. मोर महाविद्यालय, तुमसर, जि. भंडारा

डॉ. संतोष एम. गिरहे
(हिंदी विभाग)
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपूर विद्यापीठ

प्रस्तावना:

जगदंबा प्रसाद दीक्षित के मुरदाघर उपन्यास का कथ्य संवेदनशील, रोमहर्षक एवं रोचक है। इनके कथा साहित्य में महानगरीय जीवन के अनेक समस्याओं को यथार्थ चित्रण किया गया है। इनके मुरदाघर उपन्यास में वेश्यावृत्ति, बेरोजगारी, भिक्षावृत्ति, बालगुन्हेगार, मजदुरों का शोषण, पारिवारीक कलह, वर्ग संघर्ष, जातिवाद आदि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक समस्याओं को लेकर शहरी आम आदमी की रोचक भाषा में इनका कथा साहित्य रचा हुआ है। दीक्षित जी का मुरदाघर उपन्यास का 'कथ्य' और शैली' का अध्ययन प्रस्तुत लेख में किया जा रहा है। इससे पूर्व हमें 'कथ्य' क्या है ? तथा इसके अर्थ और स्वरूप को जानना आवश्यक है।

❖ **कथ्य: अर्थ एवं स्वरूप:**

'कथ्य' का अर्थ है – 'कथनीय' जिसे अंग्रेजी में 'केटेंट' (Content) कहते हैं, जिसका कोषगत अर्थ है – 'अंतर्वस्तु, अंदर रखी हुई वस्तु, विषय वस्तु, सार विचार अथवा धारणा का मूल तत्व या सार तत्व।'[१]

'मुरदाघर' (१९७४):

'मुरदाघर' मुंबई जैसे महानगर के झोपड़पट्टी में बसनेवाली वेश्याओं की व्यथा की कथा है। जिसे जगदंबा प्रसाद दीक्षित ने मानवीय संवेदनात्मक धरातल पर प्रस्तुत किया है। महानगर मुंबई को आधार बनाकर लिखा गया यह उपन्यास सफेद रोषनी से जगमगाति उँची इमारतों की लंबी कतार के दूसरी ओर बसे उन झोपड़पट्टी वाले लोगों के अभिशप्त जीवन की गाथा है। जो सड़ांध से भरी हुई जिंदगी में साँस लेने को विवश है। ये लोग जिंदा इसीलिए है कि इनके साँस चल रहे हैं। अतः इनका जीवन पशुवत है। इनके सामने "हर सुबह..... हर षाम..... एक ही सवाल..... कैसे जले चूल्हा ?"[२] इस उपन्यास में दो कथाएँ समांतर चलती

हैं। एक मैना और पोपट की तो दूसरी है जब्बार और हसीना की। मरियम, रोजी, पारबती, नूरन, जमीला, मंगला, चमेली, बशीरन आदि वेश्याएँ भी इस उपन्यास की पात्र हैं। इस उपन्यास का नायक कोई एक नहीं है बल्कि सभी नायक है।

पोपट और मैना पति-पत्नी है। पोपट एक कामचोर, जुआरी, आलसी किस्म का इंसान है। जो अपनी पत्नी मैना को वेश्या व्यवसाय के लिए विवश करता है। बार-बार मैना को मार-पीटकर जोर-जबरदस्ति उससे पैसे छीन लेता है। और मटका खेलता है। वह एक रात में ही हाजी सेठ की तरह अमीर बनना चाहता है। मैना पोपट के इस व्यवहार से तंग आकर उसे गंदी गालियाँ देती हुई कहती है..... "मादरचोद!..... तेरी माँ की.....! तेरा कभी भला नहीं होगा।..... साला हरामी..... तेरा मूरदा निकलेंगा.....। मरेंगा तो पानी भी नई मिलेंगा। अइसा मरद से बेमरद ठिक.....।"[३] मैना इस बोझ को ढोते हुए जीवन जिति है। एक दिन झोपड़पट्टी के इन वेश्याओं पर 'रेड' पड़ती है। और कई वेश्याएँ पकड़ी जाती है। उन्हें जेल में बंद कर उन पर अमानवीय अत्याचार किया जाता है। यहाँ तक की उनका भत्ता भी पूरा नहीं दिया जाता। जेल से छूटकर पुन्हः शरीर व्यापर में जूट जाती हैं।

इधर मरियम सिमेंट के पाईप के अंदर प्रसव वेदना से तड़प रही थी। उसे होनेवाला बच्चा किसका है इसका पता भी उसे नहीं था। उसके पास न कोई दवाखाना था न मेडिकल। ऐसी स्थिति में पार्वती जंग लगा चाकू, मिट्टी का तेल, गंदे कपड़े आदि साधनों के साथ मरियम की डिलीवरी करती है। यथः "हो गया पैदा..... काले आसमान पर एक नया तारा काली रोशनी का काला सितारा।"[४]

जब्बार पुलिस द्वारा तड़ीपार किया गया युवक है। जो अपनी पत्नी हसीना और बच्चे को मिलने के लिए चोरी-छूपे आता है। वह अपनी पत्नी हसीना को वेश्या व्यवसाय करते देख उससे घृणा करता है। अतः वह उसका विरोधी है। अपनी पत्नी घर में नहीं यह देखकर उसे बहुत घुस्सा आता है। उसके आने के बाद उसे एक दो थप्पड़ लगा देता है। और उसे अपने साथ ले जाना चाहता है। हसीना और अमजद को लेकर रेल्वे स्टेशन पर पहुँचता है, लेकिन वहाँ पुलिस वाले आ जाते हैं। जब्बार पुलिस को देखकर हसीना से बच्चे को लेकर जाने के लिए कहता है। इस पर हसीना कहती है - "ये भी बोल के जा कि क्या खाके रहूँगी तब तलक ? और ये छोकरे कू क्या खिलाऊँगी ?..... हवा खाके जिंदा रहूँगी तब तलक मैं ?"[५] खींच कर ले लेती है अमजद को और चली जाती है। फिर से हसीना अपने बेटे का और अपना पेट पालने के लिए ऐसे वेश्या व्यवसाय को अपनाना पड़ता है। मैना और हसीना इस व्यवसाय से छूटकारा चाहती है लेकिन परिस्थिति उन्हें यह इजाजत नहीं देती। रोजी को उस व्यक्ति की तलाश है जिसके साथ फोटो खिंचवाया था। इसी तलाश में वह अपना समय काट रही है।

कथा के अंत में पता चलता है कि पोपट रेल की लाईन पर कटकर मर गया है। इस बात का पता मैना को लगते ही वह व्यथित होकर आक्रोश करने लगती है। सारी जिंदगी मार-पीट करनेवाले पति के प्रति इतना लगाव यह सिर्फ भारतीय नारी में ही देखा जा हो सकता है। मैना बशीरन को लेकर मुरदाघर पहुँचती है। वहाँ उसे पता चलता है कि लाश को छूड़ाने के लिए पचास रूपए की आवश्यकता है, लेकिन उसके पास इतने पैसे कहाँ ? मैना के पास अपने मरद की लाश छूड़ाने के लिए पैसे नहीं है इस से दुर्भाग्यपूर्ण बात और कौन-सी हो सकती है। पोपट की लाश का अंतिम दर्शन 'मुरदाघर' में ही कर लेती है और अश्रु नयनों से वापस वहीं दुनिया में लौटती है..... "जहाँ चारों तरफ..... बिखरे हुए हैं मुरदे..... उस दुनिया की तरफ..... जहाँ..... और भी हैं मुरदे.....।"[६]

'मुरदाघर' के हर पात्र इस गंदी दुनिया से अपना संबंध तोड़ना चाहते हैं। चाहे पोपट हो, मैना हो, या फिर जब्बार और हसीना हो। पोपट अपनी पत्नी को खोली लेकर देने की आस रखता है तथा मैना को इस नरक से निकालना चाहता है। इसके लिए वह बार-बार मटका खेलता है। और एक रात में ही हाजी सेठ की तरह अमीर बनाना चाहता है। जो उसके लिए संभव नहीं था। जब्बार भी हसीना को इस दलदल से बाहर निकाल अपने साथ ले जाने का प्रयास करता है। लेकिन यहाँ भी परिस्थिति उसके अनुकूल नहीं थी। अतः वह पुलिस द्वारा पकड़ा जा कर जानवर की तरह पीटा जाता है। और हवालात में बंद होता है।

भाषा शैलीगत अध्ययन:

साहित्य के क्षेत्र में भाषा का अनन्यसाधारण महत्व है भाषा की सहायता से ही रचनाकार पाठकों पर अच्छा प्रभाव डालते हैं। इसलिए उपन्यास और कहानियों की भाषा सरल, स्पष्ट सशक्त और कलापूर्ण होनी चाहिए। भाषा द्वारा ही एक पात्र अन्य पात्रों को अपने भाव और विचार सहज सरलता से व्यक्त कर सकता है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी भाषा के संदर्भ में कहते हैं कि "भाषा मानव उच्चारण अवयवों की ध्वनि प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है जिसके द्वारा समाज विषेष के लोग आपस में विचार-विनिमय करते हैं। तथा कवि लेखक या वक्ता अपने विचारों को मनोभावों को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।[७]

उपरोक्त परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि लेखक अपने विचारों तथा भावों को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। और भाषा एक सामाजिक संपत्ति है। भाषा के द्वारा ही कोई लेखक या रचनाकार अपने जटिल-से-जटिल भावों को, विचारों को सरल और प्रवाहमयी भाषा में पाठक के सामने रखने का प्रयास करता है। भाषा सरल और प्रवाहमयी हो तो पाठक उतने ही सहज रूप में उसे ग्रहण करता है। साहित्यिक भाषा आम बोल-चाल की भाषा से

अपना अलग अस्तित्व रखती है। फिर भी आम बोल-चाल में लिखा गया साहित्य अपनी जिवंतता की ग्वाही देता है। दीक्षित जी का मुरदाघर उपन्यास भी आम लोगो द्वारा बोली गयी भाषा में लिखा गया है। इस में कई भाषाओं के शब्दों का प्रयोग रचना के आधार पर वाक्यों का प्रयोग, अर्थ के आधारपर वाक्यों का प्रयोग, आदि का प्रयोग बड़े ही सशक्त तरीके से दीक्षित जी ने अपने मुरदाघर उपन्यास में किया है।

शैलीगत प्रयोग:

'शैली' शब्द अंग्रेजी के Style शब्द का हिंदी रूपांतर है। 'स्टाइल' लैटिन भाषा के 'स्टीलस' से व्युत्पन्न है। हिंदी में इसे 'शैली' कहा जाता है। 'शैली' का अर्थ काम करने की पद्धति, तौर-तरीका आदि है। प्रस्तुत कथा साहित्य का शैलीगत अध्ययन करने से पुर्व 'शैली' शब्द का अर्थ देखना आवश्यक है।

'शैली' शब्द का अर्थ हिंदी, अंग्रेजी, हिंदी-मराठी और अंग्रेजी शब्द कोशों में इस प्रकार स्पष्ट किया हैं -

१. राजपाल हिंदी शब्दकोष के अनुसार।

i) "शैली-ढंग, तरीका,
ii) साहित्य विचार प्रकट करने का ढंग
iii) वस्तु निर्माण का कलापूर्ण ढंग"

२. ब्रहत् मराठी-हिंदी शब्दकोष के अनुसार

"ढंग

i) ढंग, रीति, शैली, तरीका, तर्ज।
ii) बुरा काम, कुटेव, मनमौजी बरताव।

इस प्रकार 'शैली' शब्द का अर्थ ढंग और तरीका है। साहित्यिक क्षेत्र में अपने विचार व्यक्त करने की पद्धति, ढंग को 'शैली' कहा है तो वस्तु के निर्माण की कलात्मक पद्धति ही शैली है। तो मराठी शब्द के लिए हिंदी में ढंग रीति, शैली, तरीका, तर्ज, बुरा काम, कुटेव और मनमौजी बरताव आदि शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

शैली: परिभाषा:

डॉ. मैथिलीप्रसाद भारद्वाज के अनुसार – "शैली व्यक्तित्व का अनिवार्य अंग है। इस प्रकार व्यक्तिगत विविधता के साथ शैली वैविध्य भी सहज-स्वाभाविक है। हर कलाकार अपने

व्यक्तित्व तथा कथ्य के अनुरूप शैली का चयन करता है। यही कारण है कि, यथावसर शैली में तर्क, भाव, वर्णन, विवेचन, व्याख्या, गति-स्थिति, गांभीर्य, फैलाव का अविर्भाव होता है।[८]

उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट होता है कि, व्यक्ति के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण घटक शैली होता है। जिस प्रकार व्यक्तिमत्व में भिन्नता होती है। उसी प्रकार शैली में विविधता का होना सही है इसी कारण प्रत्येक कलाकार अपने व्यक्तित्व अथवा विषयवस्तु के अनुसार शैलियों को अपनाता है।

भावात्मक शैली:

कृति को उँचाई तक पहुँचाने के लिए भावों का होना जरूरी है। भावात्मक भाषा में हृदय को छू लेने की क्षमता होती है। यह भाषा सीधे हृदय से प्रस्फुटित होती है जिस से पाठक वर्ग के भाव जागृत हो जाते हैं 'मुरदाघर' घर उपन्यास में भावात्मक शैली का प्रयोग यत्र-तत्र हुआ है। 'मुरदाघर' की पात्र मरियम एक नाजायज बच्चे को जन्म देती है। मरियम को भी पता नहीं की इस बच्चे का पिता कौन है। इस नौजात शिशु की ओर देखती हुई कहती है -

"..... ऐ! सुना क्या ? तू नई आता ना..... तेरे कू भी अच्छा रहता और मेरे कू भी।..... मेरे कू..... मेरे कू मालम है..... तू रहेंगा नई..... चला जाएँगा। वोई ठिक भी है। पण तू आयाच कायकू ? अभी तू जाएँगा..... हो जाएँगा अल्ला कू प्यारा। क्या बोलेंगा उसकू..... अल्ला कू ? कि मेरी अम्मा भोत खराब है..... नई क्या ? अइसाच बोलेंगा तू ? ए साला! बोलना! अइसाच बोलेंगा ना तू..... ?..... नई रे! सुना क्या ? नईं! अइसा मत बोलना अल्ला कू। तेरी अम्माँ कू..... दूसरा कुछ रस्ताच नईं। क्या समझा ? कुछ रस्ता नईं। मालम क्या करू मैं किधर जाऊँ।..... हाँ रे! अपनी अम्माकू भी ले चल अपने साथ। सच्ची बोलती। मेरे कू ले चल। मैं चलूँगी तेरे साथ। सुना क्या ?[९]

"..... अरे! तू हँसता क्या ? सच्ची! हँसता! हच्छाला! हच्छाला! हँछता बदमाछ! मेरी बात छुनके हँछता। हच्छाला। हच्छाला.....![१०]

उपरोक्त मरियम के कथन से यह स्पष्ट होता है कि, उसने जन्मा यह बच्चा उसे नहीं चाहिए वह उसके मरने की कामना करती है। वह जानती है कि वह इस बच्चे को कुछ नहीं दे पाएगी पर उसकी इन बातों से यह बच्चा जब हँस पड़ता है तो उसके इस हंसने से मरियम का मातृसुलभ वात्सल्य भाव जाग उठता है।

वर्णनात्मक शैली:

इस शैली में कहानी वर्णन कथन के माध्यम से सुगठित की जाती है। सामाजिक एवं ऐतिहासिक उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग अधिक मात्रा में दिखाई देता है। लेखक की लेखनी के गौरव के साथ उस की क्षमता को भी उद्घोशित करती है। दीक्षित के उपन्यासों और कहानियों में इस शैली का प्रयोग किया गया है।

'मुरदाघर' उपन्यास में काली छोकरी आपने गाँव का वर्णन कर रही है – "घर की बातें गाँव की। वहाँ..... गाँव के पास नदी..... नदी के पास आम के पेड़..... आम के पेड़ों के पास कच्चा रस्ता..... रास्ते पर मकान.....।"[११]

इस उद्धरण के द्वारा कथाकार की प्रतिभा और कल्पना स्पष्ट होती है। और साथ में लेखक यह भी दर्शाना चाहते हैं कि, उस लड़की का घर नैसर्गिक स्थान और पेड़ों और पौधो के बीच है।

पूर्व-दीप्ति शैली:

पूर्व-दीप्ति शैली को अंग्रेजी में ''फ्लैश बैक'' कहा जाता है। इस शैली में जीवन के अतीत में घटित घटनाओं का चित्रण किया जाता है। वे घटनाएँ वर्तमान की घटनाओं को सहायता करती है। प्रस्तुत उपन्यास 'मुरदाघर' में इस शैली का प्रयोग किया गया है।

किस्सागोई शैली:

लोक कथाओं के समान किसी विषय से संबंधित कथा या किस्सा बताने की प्रणाली को ही किस्सागोई शैली कहा जाता है। इस शैली में संदर्भित किस्सा बताकर लक्ष्य विषय को स्पष्ट या पुष्ठ करने का प्रयास किया जाता है। दीक्षित के कथा साहित्य में किस्सागोई शैली का प्रयोग हुआ है। उनके 'मुरदाघर' उपन्यास में काली लड़की जो की पुलिस द्वारा वेश्या-व्यवसाय के जुर्म में पकड़ी गई है। और जेल के अंदर अपनी एक सहेली हंसा का किस्सा मैना को बता रही है - "हर रोज नदी पर आता था..... थोड़ा-थोड़ा बोलने लगा।..... हंसा की नई..... भोत भोली छोंकरी.....। उसकू मोहब्बत करने लगा वो। बोला की उसकू परनेंगा..... अपना घर में अपना औरत बनाके रखेंगा। पण हंसा की नई..... उसका बात का भरोसाच नई की। उसकू डाँट दिया। फिर उसका सकल नईं देखा।"[१२]

यथार्थ शैली:

समाज में जो जैसा है उसका उसी रूप में तटस्थता से किया गया चित्रण ही यथार्थ है। समाज में व्याप्त विद्रुपताएँ, अंधविश्वास, अनर्गल प्रथा परंपराएँ, विभिन्न मानवीय संबंध,

समाज में घटित असंवैधानिक घटनाएँ आदि का रचनाकार जैसा के तैसा चित्रित करता है। इसमें लेखक पाठक को यथातथ्य घटना से परिचित कराता है। जैसे -

'**मुरदाघर**' उपन्यास में पुलिस द्वारा वेश्याओं पर किये गए अमानवीय व्यवहार का यथार्थ चित्रण लेखक ने किया है। उदा. पुलिस की रेड़ गिरते ही हाथ आजाती है पारबती सड़-सड़ पड़ रहे हैं बेंत।..... बच नहीं सकती मैना। आ गया हवलदार। भागने की ताकत नहीं। ".....नई .....नई! तुम मेरे कू मारना नईं! मैं चलती तुम्हारे साथ। पाँव पड़ती..... मारना नई मेरे कू.....। अरे बापरे..... मार डाला। कायकू मारता तुम हमकू ? हम कुछ खाया है तुम्हारा? जिधर ले चलने का होगा चलो..... मारने का कोई गरज नईं।[१३]

चिल्लाता है हवालदार..... "साली! मुजोरा करेंगी। लगा इसकू दो और..... टाक गाड़ी मध्ये।"[१४]

मनोविश्लेषनात्मक शैली:

मनोविश्लेषणात्मक शैली द्वारा कथाकार पात्रों की मनःस्थिति अथवा मानसिकता को चित्रित करने का प्रयास करते हैं। 'मनोविश्लेषण' के द्वारा अज्ञात मन के अंदर निर्मित द्वंद्वता एवं भावनाओं की हलचल स्पष्ट होती हैं। दीक्षित के उपन्यासों और कहानियों में 'मनोविश्लेषनात्मक शैली' का प्रयोग किया है। जैसे, 'मुरदाघर' उपन्यास में मरियम एक वेश्या है, किसी मजदूर से वह पेट से रहती है और उसे बच्चा होनेवाला है। वह अपने मन की व्यथा को अभिव्यक्त कर रही है "कौन है पाइप के अंदर ?..... भड़वी का! कौन आया था ? कर ड़ाला। डाल दिया बच्चा पेट में।..... गुड़ और काला तिल किसने बताया था ? झूठ! बिल्कूल झूठ। जो कुछ बताया था..... सब..... झूठ निकला।"[१५]

मरियम इस बच्चे को लेकर खुश नहीं है। किसी मजदूर से उसे यह बच्चा ठहरा था। उसे यह चिंता है कि यह लड़का भूख से बेहाल होकर मर जाएगा। उसे अपने पेट भरने की भी चिंता है वह सोचती हैं कि 'इस बच्चे को पकडेगी की, धंदा करने चले जाएगी' ऐसी मनोव्यथा को यहाँ मरियम द्वारा लेखक ने अभिव्यक्ति दी है।

हास्य-व्यंग्यात्मक शैली:

हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के समीक्षकों, लेखकों ने भी व्यंग्य को परिभाषित किया है। व्यंग्य वह है, जहाँ कहनेवाला अधरोष्ठ में हँस रहा हो और सुननेवाला तिलमिला उठा हो और फिर भी कहनेवाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासास्पद बना लेना हो जाता हो।

'मुरदाघर' उपन्यास में दीक्षित ने हास्य-व्यंग्य का प्रयोग किया है। उदा. गोपू, राजू मम्मद आदि लड़के अंधेरे में नहाते नंगे बुड्ढे को चिढ़ाकर हँसी-मजाक कर रहे हैं - "..... ए..... ए आदमी.....! ए साला नंगा..... ए गांडू..... ए मादरचोद!

खुल गया लुंगी..... बज गया पुंगी..... साला ढुंगी किधर तेरा लुंगी.....?"[१६]

यह एक ऐसी घटना है जिसमें सिर्फ हंसी मजाक ही नहीं बल्कि उन राजनीतिक नेताओं पर ऐसा व्यंग्य है जो भारत को महासत्ता बनाने का सपना देखते हैं। आजादी के बाद यहाँ के लोगों के बुनियादी प्रश्न (रोटी, कपड़ा और आवास) ही नहीं मिटे। जहाँ लड़कों को खेलने के लिए पार्क नहीं है, तथा शिक्षा से वंचित यह लड़के अपने ही सम दुःखी व्यक्ति का मजाक उडाऐंगे नहीं तो और क्या करेंगे ? नंगे आदमी के पास एक ही लुंगी है। वह अंधेरे में इसलिए नहाता है कि उसे कोई नंगा न देख ले।

चेतना प्रवाह शैली:

जब कथाकार बिखरे हुए विचारों को उनके स्वाभाविक रूप में किसी केंद्रस्थ पात्र के माध्यम से विश्लेषित करता है। तो उस विश्लेषण को चेतना प्रवाह शैली कहा जाता है।

'मुरदाघर' उपन्यास में लेखक ने जब्बार इस पात्र के माध्यम से संपूर्ण पुलिस व्यवस्था को गाली देते हैं तथा पुलिस के अमानवीय व्यवहार को उजागर करते हैं। उदाहरनार्थ - "है..... है..... तुम लोक चोर सबसे बड़ा चोर। तुम चोर तुम्हारा साब लोक चोर..... तुम्हारा मिनिस्टर लोक चोर।..... साला तुम सब का पैसा खाता।"[१७]

दीक्षित के कथा साहित्य की भाषिक विषेषताएँ:

समस्त प्राणी जगत में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो अपनी देखी या सुनी बातों को वाणी द्वारा प्रकट करता है। रचनाकार इससे भी आगे बढकर अपनी प्रतिभा और कल्पना शक्ति के द्वारा अपने विचारों को साहित्य के विविध विधाओं में शब्दबद्ध करता है। इस प्रस्तुतिकरण में भाषागत विविध प्रयोगों, शब्दावलियों तथा शैलियों के साथ-साथ मुहाँवरों, कहावतों एवं लोकोक्तियों का सहारा लेता है। लेखक के द्वारा प्रयुक्त ये उपादान उनकी अलौकिक प्रतिभा, निरीक्षण शक्ति, अनुभव, संवेदनशीलता तथा उनके जीवन की तरह देखने के नजरिए के साथ जुड़े रहते हैं।

दीक्षित ने भी अपने कथा साहित्य में भाषा के विविध उपादानो का प्रयोग किया है। उनकी भाषा में विभिन्न प्रकार के वाक्यों का प्रयोग, कई भाषाओं के शब्दों का प्रयोग, तथा शैलियों के प्रयोग के साथ-साथ इनकी यह भाषा उन्हें एक अलग स्थान प्राप्त करा देती है। ऐसी ही भाषा के विषेषताओं को यहाँ स्पष्ट किया जा रहा है।

- पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग
- लाक्षणिकता
- संप्रेषनीयता
- अश्लीलता
- प्रसंगानुकूल भाषा
- गीतों प्रयोग
- मुहाँवरों का प्रयोग
- गालियों का प्रयोग

निष्कर्ष:

कथा साहित्य की आत्मा कथानक होता है, तो उसका शरीर भाषा शैली और शिल्प होता है। मुहाँवरें और लोकोक्तियाँ सौंदर्य में वृद्धि करते हैं। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि, कथाकार जगदंबा प्रसाद दीक्षित इस बात का पुरा-पुरा खयाल रखते हैं कि, अपनी भाषा की रोचकता बनी रहे। इसीलिए रचना के आधार पर तथा अर्थ के आधार पर वाक्यों के प्रयोग के साथ तत्सम, तद्भव, देषज, मराठी, अंग्रेजी, उर्दू, पंजाबी आदि शब्दों का प्रयोग अपने कथा साहित्य में यत्र-तत्र किया है।

जगदंबा प्रसाद दीक्षित का कथा साहित्य पढ़ने के बाद यह ध्यान में आता है कि, उनकी भाषा पर मराठी तथा अंग्रेजी भाषा का प्रभाव परिलक्षित होता है। दीक्षित मध्यप्रदेश के बालाघाट से नौकरी करने हेतु मुंबई आये थे तथा वहीं बस गये। इसीलिए उनकी भाषा पर महानगरीय रूप का प्रभाव भी दिखाई देता है।

मुहाँवरों, कहावतों, लोकोक्तियों और गितों के अल्प प्रयोग के बावजुद दीक्षित की भाषा सहज और रोचक जान पड़ती है। इसकी वजह यह है कि, उन्होने आम लोगों द्वारा बोली गई भाषा का प्रयोग किया है, अतः उनका उपन्यास वास्तववादी दर्शन करानेवाला साहित्य है। शैलीगत अध्ययन में उन्होंने अनेक शैलियों का प्रयोग उपन्यास में किया है। उनके कथा साहित्य में वर्णनात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, किस्सागोई शैली, मनोविश्लेषनात्मक शैली, हास्य-व्यंग्यात्मक शैली, चेतना-प्रवाह शैली आदि शैलियों का प्रयोग हुआ है। शैली की दृष्टि से उनका उपन्यास अत्यंत रोचक और प्रभावी मालुम होता है।

कथानक के मांग के अनुसार और परिवेश तथा प्रसंग के मांग के अनुसार दीक्षित के कथा साहित्य में अश्लीलता का वर्णन बेशुमार हुआ है। अश्लीलता व्यक्ति के वर्तन के साथ-साथ भाषा की भी होती है, यह अश्लीलता गाली-गलोच और लेखक के वर्णन में है। उन्होंने गुप्तांगों को लेकर ढेर सारी गालियों का प्रयोग अपने कथा साहित्य में किया है। फिर भी उनकी अश्लील

गालियाँ अश्लील नहीं लगती। यही कारण है कि दीक्षित की भाषा शैली हिंदी साहित्य जगत में अपना एक अलग अस्तित्व रखती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१. महीप सिंह कहानियों का कथ्य और शिल्प: प्रा. सत्यपाल राजपूत, पृष्ठ क्र. २८८

२. मुरदाघर: जगदंबा प्रसाद दीक्षित, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्राईवेट लिमिटेड जी – १७, जगतपुरी, दिल्ली - ११००५१ पृष्ठ क्र. ८

३. वही, पृष्ठ क्र. १२

४. वही, पृष्ठ क्र. ९१

५. वही, पृष्ठ क्र. १२६

६. वही, पृष्ठ क्र. १४७

७. भाषा विज्ञान: भोलानाथ तिवारी, किताब महल, १५ थार्नहिल रोड़, इलाहाबाद, पृष्ठ क्र. ४

८. डॉ. भारद्वाज मैथिली प्रसाद, पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धांत पृष्ठ क्र. ३६१

९. मुरदाघर: जगदंबा प्रसाद दीक्षित, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्राईवेट लिमिटेड जी – १७, जगतपुरी, दिल्ली - ११००५१ पृष्ठ क्र. ८५

१०. वही, पृष्ठ क्र. ८६

११. वही, पृष्ठ क्र. ८४

१२. वही, पृष्ठ क्र. ५३

१३. वही, पृष्ठ क्र. ८९

१४. वही, पृष्ठ क्र. ९०

१५. वही, पृष्ठ क्र. ८७

१६. वही, पृष्ठ क्र. ४४

१७. वही, पृष्ठ क्र. ३७